

प्रणुदन्तु 13, 3675. प्रणोत्स्ये ऽहं भयमेतत् 14, 267. प्रणुद्यान्मे वृत्तिनाम् Hārīv. 7442. R. 3, 78, 8. प्रणुद्य शोकम् (bei sich) R. Gorr. 2, 53, 41. in Bewegung setzen, treiben: प्र नाकमूर्धं नुन्दे वृक्षम् RV. 7, 86, 1. — partic. प्रणुत्त AV. 9, 2, 14, 11, 9, 20. प्रणुत्त fortgestossen Çiç. 9, 71. vertrieben, verschencht: (दानवान्) गाण्डीवास्त्रप्रणुत्तान् MBh. 3, 12253. 11392. 4, 1490. 1695. angetrieben: (तेन) तेषां (कृपाणां) प्रणुत्तानामाप्रुत्वाच्छीघ्रगामिनाम् 3, 12096. in Bewegung gesetzt: बाहुवेगप्रणुत्तेन समुद्रेण R. 5, 3, 38. तस्य सैन्यस्य रेणुमुद्धतं वै वानिखुरप्रणुत्तम् MBh. 3, 15691. प्रणुदित in der Stelle: (गाम्) कशादपुप्रणुदिताम् weggetrieben MBh. 1, 6670. Vgl. प्रणुद u. s. w. — caus. 1) von sich wegstossen: स मृत्पुपाशान्पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके Kāthop. 1, 18. — 2) in Bewegung setzen, aufregen: भयप्रणोदितात्तरात्मन् Pāṇāt. 163, 10. — 3) Jmd (acc.) zu Etwas (acc.) drängen, Jmd um Etwas angehen: प्रणोदयाम्यहं यत्ना तन्मे व्याख्यातुमर्हसि Varāh. Brh. S. 87, 44.

— अतिप्र Jmd stark drängen, Jmd stark zusetzen Daçak. in Benf. Chr. 193, 14.

— अनुप्र von sich stossen: अनुगृह्णीयाननुप्रणुदेत् Kauç. 56. verschrecken, in die Flucht jagen: अनुप्रणुत्ता रत्तोभिः सिंहेरिव महाद्विपाः R. 6, 7, 36.

— संप्र treiben, drängen: विधिना संप्रणुदितः शापायास्य मनो दधे MBh. 3, 377. viell. fern halten von (ablat.) so v. a. missgönnen 3, 745.

— प्रति zurückstossen, abwehren: अग्रे मन्युं प्रतिनुदन्परोपाम् RV. 10, 128, 6. VS. 13, 1. TS. 1, 1, 3, 6. ७, 8. Kāth. 28, 4. 31, 8. Pāṇāv. B. 16, 6, 12. अदित्या वा एतं भूयै प्रतिनुदत्ते TS. 2, 3, 1, 1.

— वि 1) auseinanderreiben, wegtreiben, vertreiben: वि मूधो नुदस्व RV. 10, 84, 2. 180, 2. Çāṅkh. Ça. 14, 38, 5. 6. — 2) verwunden: चोदयामास तानश्चान्विनुत्तान्भीष्मायैः MBh. 6, 4846. मोचयामास तुरगान्विनुत्तान्कङ्कपत्त्रिभिः 7, 3727. शरैर्विनुत्ताङ्गनियत्वाकृत्योः 8, 4528. — 3) schlagen, spielen (die Cyther): वीणाम् Bāḷg. P. 4, 8, 38. अतोद्यम् 12, 39. — Vgl. विनुद u. s. w. — caus. 1) vertreiben, verschrecken: तापं विनोदय दृष्टिभिः Glr. 10, 13. विनोदितदिनक्लाम् Çiç. 4, 66. — 2) zubringen (die Zeit): (तम्) आश्रासयत्तो विप्रायाः तयो सर्वा व्यनोदयन् MBh. 3, 46. — 3) zerstreuen, aufheitern, erheitern: (अप्सरसः) प्रहृष्टव्रता विनोदिताः केशिनिसूदनेन Hārīv. 8470. प्रहृष्टकोपष्टिकेकिलस्वनैर्विनोदयत्ते (विनोदितं तं R. Gorr. 2, 54, 42) वसुधाधरम् R. 2, 54, 41. पुष्यं फलं चार्तवमाकर्त्तयः — विनोदयिष्यन्ति नवाभिषङ्गाम् (त्वाम्) Ragh. 14, 77. कथं वा देवी सरुजवादिनाद्यते Mālav. 43, 13. कोपविष्य — लतासु दृष्टिं विनोदयामि Çāk. 81, 17, v. l. क नु खलु — अमल्लात्तमात्मानं विनोदयामि 32, 12. Mālav. 41, 3. Vihr. 30, 10. Prab. 2, 16. लोलं विनोदय मनः सुमनोलतासु Spr. 133. चेतो विनोदयन् । स्थानस्थानेषु वध्राम Kāthās. 26, 74. — 4) sich erheitern, sich ergötzen an (instr.): लक्ष्मीर्विनोदयति येन Ragh. 3, 67.

— अभिवि caus. aufheitern, erheitern MBh. 12, 898.

— सम् zusammendrängen, — bringen: अमं च मां च सं नुद AV. 6, 139, 3. इहेमाविन्द्रं सं नुद चक्रवाक्च दंपती 14, 2, 64. Kauç. 79. — caus. 1) dass.: स्वां सेनां समनोदयत् MBh. 6, 777. तं तथा क्षिप्रमूलेन सेनोदयितुमर्हसि (?) 12, 5443. — 2) herbeischaflen: अहं सेनोदयाम्येनं यः कार्यं साधयिष्यति R. 5, 1, 92. — 3) antreiben: कृपोत्तमान् — सेनोदयामास (संचोदयामास MBh. 3, 2850) N. 20, 33.

— उपसम् zusammendrängen, — bringen, herbeischaflen: मरीचिरूपसंनुद Taitt. Ār. 4, 39, 1. अस्मभ्यं तत्रमजरं सुवीर्यं गोमदश्चवडुपसंनुदेत् Taitt. Br. 3, 1, 1, 10 in Z. f. d. K. d. M. 7, 268.

2. नुद (= 1. नुद) adj. am Ende eines comp. vertreibend, verschreckend, entfernend: अराति° MBh. 3, 1702. रतिश्रम° Kir. 5, 28. Hierher oder zu नुद die Accusative: पापनुदम् Çvetāçv. Up. 6, 6. अमनुदम् Ragh. 9, 3. गुरुवचननुदम् von sich weisend, nicht hörend auf MBh. 12, 12072. — Vgl. गर्भ°, जठर°, तमो°, तिमिर°.

नुद (von 1. नुद) adj. dass.: शशी लोकतमोनुदः R. 1, 35, 17. 6, 80, 8. दुःखशोकतमो° Bhāg. P. 9, 24, 60. स्वेदनुदो ऽनिलः R. 2, 91, 24. In der Stelle: वर्जयेदुषतीं वाचं हिंसायुक्तां मनोनुदाम् MBh. 12, 3777 ist wohl °तुदाम् das Herz verletzend zu lesen. — Vgl. तमो°.

नू s. u. 1. 2. und 3. नु.

नूतन (von 1. नु) adj. neu, jung, neuerlich geschehen, — erschienen, jetztig, gegenwärtig (von Personen und Sachen); augenblicklich, plötzlich (Gegens. पूर्व, पूर्व्य, पुराण, सन) Naigh. 3, 28. Nir. 7, 16. P. 5, 4, 30. Vārtt. 2. AK. 3, 2, 27. H. 1448. Halāḥ. 4, 26. पृथ्या मूहान्युत नूतना कृतानि RV. 2, 11, 6. स्तोमेभिः 3, 32, 13. 6, 44, 13. अयस् 3, 47, 5. 31, 6. ष्येनयं चिज्जवंसा नूतनेना गच्छन्तम् 5, 78, 4. 1, 118, 11. आयु 2, 20, 4. कस्तद्विभर्ति नूतनः 1, 105, 4. 1, 2. पूर्व, अपरासः, नूतनः 5, 42, 6. 6, 21, 5. ब्रह्मण्यत् 8. न पुराणो नोत नूतनः 10, 43, 5. AV. 7, 21, 1. TS. 3, 3, 1. अन्वर Varāh. Brh. S. 72, 13. 17. पूर्वपार्यिक, नूतनश्च Ragh. 8, 15. इन्दु Kāthās. 13, 58. यौवन frisch 24, 228. मनोराज्याभिषिक्ता (कन्दर्प) Sāh. D. 40, 6. नय neu so v. a. seltsam Hit. 77, 7.

नूतनय् (von नूतन), °यति erneuern: अजितकीर्तिमालां पदे पदे नूतनयस्मोदयाम् Bhāg. P. 3, 8, 1.

नूत adj. = नूतन und auch daraus entstanden Naigh. 3, 28. P. 5, 4, 30. Vārtt. 2. AK. 3, 2, 27. H. 1448. Halāḥ. 4, 26. न तं इन्द्रं सुमतये न रायः संचले पूर्वा उपसो न नूताः neu so v. a. künftig RV. 7, 18, 20. नूता इदिन्द्र ते व्यमृती अभून् नूदि नूतं अद्रिवः । विद्या पुरा परीणसः 8, 21, 7. डुकूले Bhāg. P. 3, 23, 28. °वयस् in der ersten Blüthe der Jahre stehend 6, 1, 35. (स्त्रीणाम्) नूतं नूतं विचिन्वताम् stets einen neuen (Liebhaber) 8, 9, 10.

नूद m. eine Art Maulbeerbaum AK. 2, 4, 2, 22.

नूतभाव (नून् + भाव) m. Wahrscheinlichkeit: °भावात् so v. a. नून्म् MBh. 3, 59. Der Ausfall des Nasals befremdet.

नून्म् (von 1. नु) ved., नून्म् Çānt. 4, 13. adv. 1) jetzt, gegenwärtig, eben, gerade: पुरा, नून्म्, अपरम् RV. 2, 28, 8. 1, 189, 4. 6, 33, 5. 34, 1. अवा नूनं यथा पुरा 48, 19. न नूनमसि नो अयः 1, 170, 1. उप नूनं युयुजे कृत्वा अ च जगाम 8, 4, 11. शिशिति नूनं परश्रुम् 10, 53, 9. AV. 7, 73, 2. Çat. Bh. 1, 4, 1, 16. — 2) nun (in nächster Zukunft), alsbald, von nun an, künftig: अद्या नूनं च RV. 1, 13, 6. उत नूनं यदिन्द्रियं करिष्याः 4, 30, 23, 7, 26, 3. नूनं संजदशानिम् 104, 20. या व्यूष्याञ्च नूनं व्युच्छान् 1, 113, 10. ताः प्रलवन्त्यसीनमस्मे र्वचडुच्छन्तु 124, 9. नूनमयं 8, 46, 15. — 3) nun, denn, also; folgernd, auffordernd, anreihend (wie 1. नु): नूनं सा ते प्रति वरं जरिरे डुकीयात् RV. 2, 11, 21. इन्द्राय नूनमर्चत 1, 84, 5. 4, 33, 11. 5, 42, 1. 14. नूनं तदिन्द्रं दद्वि नः 8, 13, 5. 18, 1. किं नूनमस्मान्कृष्णवदरातिः 48, 3. प्र ननं ज्ञातवैदममश्चं हिनेत 10, 188, 3. 1, 82, 3. घस्तां नूनम् VS. 21, 43.